International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157
Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 3; Issue 2; March 2018; Page No. 198-201

भारत–जापान सम्बन्ध : ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक परिप्रेक्ष्य

कुमार सौरभ
शोध छात्र (जे0आर0एफ0), राजनीति विज्ञान विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद उत्तर प्रदेश, भारत।

सारांश
जापान एशिया महाद्वीप के पूर्वी छोर पर स्थित द्वीप–समूहों का एक छोटा सा देश है, जबकि भारत दक्षिण एशिया में स्थित है। भारत क्षेत्रफल की दृष्टि से जापान का 9 (नौ) गुना एवं जनसंख्या की दृष्टि से 10 दस गुना बड़ा है। भारत–जापान सम्बन्ध कोई नया नही है, दोनों देशों के मध्य सम्बन्ध की परम्परा अत्यन्त समृद्ध एवं सदियों पुरानी है। इन दोनों देशों के मध्य सम्बन्ध की प्राचीनता 'बौद्ध धर्म' के जापान में प्रचार–प्रसार तक जाती है। उस समय बौद्ध धर्म प्रायः दो वर्गो में विभाजित हो चुका था प्रथम 'महायान' एवं द्वितीय 'हीनयान'। जिसमें से बौद्ध धर्म के 'महायन' शाखा का जापान में प्रसार हुआ, जो 3–4 सदी ई0 पू0 से 538–40 ई0 तक की एक लम्बी यात्रा से होते हुये चीन एवं कोरिया के बाद जापान पहुँचा। बौद्ध धर्म के प्रसार के इस दौर में जापान में 752 ई0 में भगवान बुद्ध की एक 18 मीटर ऊँची प्रतिमा की स्थापना की गयी, जिसमें प्राण प्रतिठा का शुभ कार्य बौद्ध भिक्षु 'भूतिसेना' द्वारा सम्पन्न किया गया था।

मूल शब्द : बौद्ध धर्म, विचारधारा, भारत एवं रास बिहारी बोस।

प्रस्तावना
जहाँ एक तरफ जापान में बौद्ध धर्म का प्रसार हो रहा था वहीं दूसरी तरफ बारहवीं सदी में मंगोलों द्वारा सात वर्षो के अन्तराल में दो बार भयंकर आक्रमण किया गया। इन दोनों आक्रमणों के समय भाग्य जापान के साथ था तथा दोनों ही आक्रमण विफल सिद्ध हुये। इस प्रकार प्रकृति के क्रियाकलापों से हुयी जापान की सुरक्षा ने जापान के लोगों में महात्मा गौतम बुद्ध, बौद्ध धर्म एवं भारत के प्रति आदर्श की भावना को जन्म दिया।

कन्फ्यूशियनिज्म का जापान में प्रसार
बारहवीं सदी में चीन से जापान पहुँची यह विचारधारा कोरिया को अत्याधिक प्रभावित किया तथा जापान में इस विचारधारा के लोगों द्वारा गौतम बुद्ध एवं बौद्ध धर्म का विरोध किये जाने के कारण जापान में बौद्ध धर्म का ह्रास होना प्रारम्भ हुआ। किन्तु बौद्ध धर्म में प्रारम्भ हुआ ह्रास क्षणिक मात्र था। बौद्ध धर्म के परम् अनुयायी युवराज 'शोतोकू' (जिन्हें जापान में बौद्ध धर्म के सम्बन्ध में जापान का अशोक कहा जाना गलत न होगा) के द्वारा 'होरियूजी' का बौद्ध मन्दिर बनवाया गया। इस तरह बौद्ध धर्म कुछ अवरोधों के बाद भी जापान में प्रसारित हुआ तथा उसने जापानियों को गहरे चिन्तन का आधार भी दिया। बौद्ध धर्म के प्रसार के फलस्वरूप जापान में जीवन के प्रति चिन्तन यथा लोग बीमार क्यों पड़ते हैं? लोगों की मृत्यु क्यों होती है? आदि चिन्तन का प्रारम्भ हुआ। इस दौर में जापानियों का परिचय न केवल संस्कृत भाषा से हआ बल्कि वे विभिन्न हिन्दू देवी–देवताओं से भी परिचित हुये। उनके धर्म ग्रन्थों में इन्द्र, यम, काम, सरस्वती, राम आदि देवी देवताओं का उल्लेख पाया जाता है।

सन् 1639–1854 का दौर एवं 'साकोकू' विदेश नीति का दौर जापान में कूपमण्डूक का दौर रहा जिसमें साकोकू विदेश नीति प्रभावी रही। 'साकोकू' विदेश नीति से तात्पर्य 'किसी भी विदेशी शक्ति के साथ सम्बन्ध निषेध' से होता है। इस दौर में जापान के साथ किसी भी प्रकार का कोई सम्बन्ध दृष्टिगत नही होता है, जिसके फलस्वरूप जापानी विचारधारा में संकीर्णता एवं अन्तर्मखीकरण की बहुलता हो गयी थी। साकोकू विदेश नीति के अन्तर्गत 'विजिमा' नामक स्थान पर कुछ दक्ष व्यापारियों को वस्तुओं के आयात–निर्यात की सीमित अनुमति प्राप्त थी। इस दौर में अगर जापान में किसी प्रकार के ज्ञान एवं संस्कृति का प्रसार हुआ तो वह इन्हीं व्यापारियों द्वारा हुआ।

जापान का आधुनिकीकरण
सन् 1868 ई0 में साकोकू विदेशी नीति की समाप्ति एवं सम्राट मोइजी द्वारा 'मोइजी पुनः स्थापना' की नीति अर्थात् 'जापान का आधुनिकीकरण' प्रारम्भ हुआ, जिसके अन्तर्गत जापान द्वारा 'खुले' नीति का अवलम्बन किया गया। ये लोग प्रायः 'सामूराई' अर्थात् 'क्षत्रिय' माने जाते थे तथा द्वितीय विश्वयुद्ध से पूर्व के 71 वर्षों में इनके द्वारा लगातार अपराजित रहते हुये अनेक युद्ध लड़े गये। ऐसा इसलिए हुआ क्योकि जापान सरकार आधुनिकीकरण के साथ–साथ सैन्य दृष्टि से सुदृढ़ होना चाहती थी क्योंकि उसे पश्चिमी देशों से आक्रमण का भय था। जापान के इस विजयरथ एवं सन् 1904–05 ई0 के जापान–सोवियत संघ युद्ध एवं जापान विजय के प्रभाव के सम्बन्ध में "Glimpses of World History" में पं0 जवाहर लाल नेहरू ने लिखा है – ''जापान की विजय रथ ने बालक जवाहर लाल नेहरू को एक एशियाई के रूप में कितना साहस और उत्साह दिया था'' जापान के इस विजय अभियान ने उसे एक साम्राज्यवादी औपनिवेशवादी एवं सैन्यवादी देश बना दिया।

जापान के आधुनिकीकरण के आरम्भ (जापान पुनः स्थापना) के उपरान्त भारत–जापान सम्बन्धों में चार प्रमुख विद्वानों 'फुकुज़ावा युकिची', 'ओंकाकुरा तेंशिन' (1862–1913) 'ओकावा शूमेई'(1886–1951) एवं 'गुरूदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर' (1861–1941) की भूमिका महत्वपूर्ण थी। फुकूजावा युकिची का मानना था कि हमें एशिया के बजाए पश्चिम से सीखना चाहिए क्योंकि भारत कोई सभ्य देश नहीं कि उसमें हम कुछ सीख सकें। यहाँ से जापान में

आधुनिकीकरण को पश्चिमीकरण के रूप में देखा गया। इस दौर में भारत–जापान सांस्कृतिक सम्बन्धों में थोड़ा सा और क्षणिकमात्र ह्रास हुआ। ओंकाकुरा तेंशिन एवं गुरूदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर के मध्य गहरी दोस्ती के चलते भारत एवं जापान के मध्य सांस्कृतिक जुड़ाव बना रहा। ये दोनों विद्वान 'एशियाई एकता' के प्रबल समर्थक थे। अपनी विचारधाराओं की समरूपता एवं सामन्जस्यता के परिणामस्वरूप गुरूदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर ने सन् 1916, सन् 1924 एवं सन् 1929 में जापान की यात्रांए की, जिससे भारत जापान सांस्कृतिक सम्बन्ध और आधिक समृद्ध हुआ। इस कड़ी में चौथे व्यक्ति थे 'ओकावा शुमेई' जिन्होंने उस समय रास बिहारी बोस की मदद किया जब जापान सरकार इंग्लैण्ड के एक एजेन्सी के रूप में कार्य करते हुये रास बिहारी बोस को इग्लैण्ड के हाथों में समर्पित करने हेतु तत्पर थी।

भारत जापान सम्बन्धों की श्रृँखला में रास बिहारी बोस भी एक महत्वपूर्ण किरदार थे। जिनका स्वप्न था भारत को 'आजाद' देखना। इस स्वप्न को साकार रूप देने के लिए उन्होंने सन् 1924 में 'भारत स्वतन्त्रता लीग' एवं सन् 1926 में 'सर्व एशिया लीग' की स्थापना की किन्तु यह उनका दुर्भाग्य रहा कि एक लम्बी बीमारी के उपरान्त सन् 1945 में ही उनका देहावसान हो गया।

इस काल में जापान सैन्य दृष्टि से मजबूत होता गया किन्तु वह आर्थिक दृष्टि से पिछड़ा रहा। ध्यातव्य है कि यह युग जमशेद जी टाटा (1839–1904) एवं शिबूशावा एईईची (1840–1931) जैसे उद्योगपतियों का भी था। इस समय भारत द्वारा जापान को कच्चे कपास का निर्यात किया गया, जिससे जापान की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ तो हुयी ही, जापान–भारत सम्बन्ध भी मजबूत हुये। स्थिति यह रही कि उपनिवेशवाद के इस दौर में भी अमरीका एवं इग्लैण्ड के बाद जापान भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार था। द्वितीय विश्वयुद्ध के अन्तर्गत सन् 1941 में प्रशान्त महासागर का युद्ध प्रारम्भ हुआ जो 15 अगस्त 1945 के दिन जापान के आत्मसमर्पण तक चला। इस युद्ध में जापानी खेमें में जर्मनी, इटली, हंगरी, फिनलैण्ड, रोमानिया, वर्मा, थाईलैण्ड एवं सुभाष चन्द्र बोस के नेतृत्व में भारत सम्मिलित था। जापान की सहायता से सिंगापुर में सुभाष चन्द्र बोस द्वारा आजाद हिन्द फौज का गठन भी किया गया और अन्ततः सन् 1945 में एक विमान दुर्घटना में सुभाष चन्द्र बोस की मृत्यु हो गयी, जिनकी अस्थियाँ रेकोंजी मन्दिर, टोक्यो में दफन की गयी हैं। जिनके संस्मरण में पूर्व प्रधानमन्त्री श्री अटल बिहारी बाजपेयी जी ने सन् 2001 में अपनी जापान यात्रा के दौरान लिखा था ''मुझे रेकोंजी दुबारा आकर प्रसन्नता हुयी, जहाँ भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के महान सेनानी नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की स्मृतियाँ सुरक्षित हैं।''

युद्धोपरान्त भारत–जापान सम्बन्ध

प्रशान्त महासागर युद्ध के उपरान्त जापान के 28 व्यक्तियों को जिन्होने युद्ध के दौरान जापान में नेतृत्व की भूमिका निभायी थी, को युद्ध अपराधी के रूप में अभियुक्त बनाया गया, जिसमें से निवर्तमान प्रधानमन्त्री सहित 7 को फँसी की सजा दी गयी थी। इन अभियुक्तों की सुनवायी के लिए न्यायधीशों की एक बेंच बैठायी गयी, जिसमें कलकत्ता उच्च न्यायालय के न्यायधीश न्यायमूर्ति 'राधाविनोद पाल' भी थे। न्यायमूर्ति पाल ने इन सभी अभियुक्तों को निर्दोष पाया तथा अपने निर्णय में एक कानूनविद् के रूप में इन्होंने टिप्पणी की कि शांति कानून युद्ध के बाद बनाए गये हैं अतः इन्होंने ऐसा कोई काम नहीं किया है जिससे किसी कानून का उल्लंघन हो। इसलिए इन्हें सजा दिया जाना ठीक नहीं है जबकि शेष सभी न्यायधीशों द्वारा उन अभियुक्तों को दोषी ठहराया गया। पाल के इस फैसले को जापान के लोग एक उपकार एवं न्यायमूर्ति राधाविनोद पाल को 'उपकारक' के रूप में जानते हैं।

भारत प्रारम्भ से ही जापान की स्वतन्त्रता का पक्षधर रहा है किन्तु सन् 1951 में सैनफ्रांसिसको सम्मेलन में विभिन्न विरोधी विचारधारा के देशों द्वारा हस्ताक्षर किया गया जबकि भारत का इस सम्मेलन में कोई प्रतिनिधित्व नहीं था क्योंकि इस सम्मेलन में सोवियत संघ एवं चीन को आमन्त्रित नहीं किया गया था। बाद में भारत द्वारा सन् 1952 में अलग से जापान के साथ शांति संधि पर हस्ताक्षर किये गये तथा कई देशों द्वारा जापान से युद्ध क्षतिपूर्ति माँगे जाने के बाद भी भारत ने क्षतिपूर्ति माँगने से इन्कार कर दिया। इस समय जापान आर्थिक दृष्टि से कमजोर हो चुका था क्योंकि वह दो परमाणु हमलों की मार झेला, उसे विभिन्न देशों को युद्ध क्षतिपूर्ति भी करनी पड़ी तथा वहाँ कच्चे माल की कमी भी थी। ऐसी स्थिति में भारत द्वारा जापान को कम मूल्यों पर अधिक मात्रा में लौह अयस्क का निर्यात किया गया जिससे एक बार फिर जापान का आर्थिक विकास तीव्र गति से होना प्रारम्भ हुआ। जापान में विकास की स्थिति यह रही कि सन् 1968 तक आते–आते वैश्विक 'सकल घरेलू उत्पाद' में अमरीका के बाद जापान दूसरा सबसे बड़ा 'सकल घरेलू उत्पाद' वाला देश बन गया।

प्रशान्त महासागर युद्ध के दौरान जापान में हाथी एवं शेर जैसे जानवर भी मार दिये गये थे ऐसे में जापान के एक प्राथमिक स्कूल के बच्चों ने 'हाथी की माँग' के सन्दर्भ में प्रधानमन्त्री पंडित जवाहर लाल नेहरू को पत्र लिखा, जिसके प्रति–उत्तर में प्रधानमन्त्री श्री नेहरू ने अपनी प्रिय पुत्री 'इन्दिरा' के नाम पर 'इन्दिरा' नाम की एक 'हथिनी' जापानी बच्चों को भेंट की। प्रधानमन्त्री नेहरू के इस कदम ने उन बच्चों सहित सम्पूर्ण जापान का दिल जीत लिया। यह दौर 'जापान में भारत की धूम' के नाम से जाना जाता है। बाद में प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गॉधी द्वारा भी जापान को 'आशा' नाम की एक हथिनी तथा जार्ज फर्नान्डीस (रक्षा मन्त्री) द्वारा जापान को एक अन्य हथिनी भेंट किया गया। इस तरह भारत द्वारा जापान को उपहार स्वरूप हथिनी भेंट किया जाना भारत जापान सांस्कृतिक सम्बन्धों का न केवल महत्वपूर्ण हिस्सा रहा है वरन् वह भारत–जापान सम्बन्धों का प्रतीक भी है।

सन् 1971 के युद्ध में जापान की सहानुभूति बांग्लादेश के साथ थी अतः युद्ध समाप्ति एवं पाकिस्तान विभाजन के बाद शीघ्र ही फरवरी 1972 में जापान ने बांग्लादेश को एक स्वतन्त्र एवं सम्प्रभु देश के रूप में मान्यता दी। भारत जापान सम्बन्धों में सन् 1974 में पोखरण परमाणु परीक्षण के बाद थोड़ी सी कड़वाहट आयी क्योंकि जापान परमाणु शाक्ति का सबसे बड़ा विरोधी देश है और ऐसा होना भी चाहिए क्योंकि जापान इकलौता ऐसा देश है जिसने परमाणु हमले का मार झेला है।

जापान एक पूँजीवादी खुली अर्थव्यवस्था का पक्षधर रहा है जो स्वाभाविक रूप से समाजवाद, लाइसेंस व्यवस्था का विरोधी था फिर भी मई 1984 में जापानी प्रधानमन्त्री 'नकासोनी यशुहिरो' भारत की यात्रा पर आये तथा अपनी इस यात्रा के दौरान भारत के साथ 'मारूति–सुजुकी' समझौता किया। इसी कड़ी में सन् 1987 में जापान द्वारा भारत में 'जापान माह' एवं उसके अगले वर्ष सन् 1988 में भारत द्वारा जापान में 'भारत महोत्सव' का आयोजन किया गया। सन् 1991 में उदारीकरण, वैश्वीकरण एवं निजीकरण के दौर में सोवियत संघ के विघटन, खाड़ी युद्ध एवं भारत में विदेशी मुद्रा भण्डार की कमी की स्थिति में भारत को सबसे ज्यादा समर्थन जापान ने दिया। जिसका परिणाम यह रहा कि उदारीकरण के बाद

भारत सूचना प्रोद्योगिकी के क्षेत्र में तीव्र गति से विकास किया, जिससे अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत की प्रतिष्ठा अधिक समृद्ध हुयी। 1990 के दशक में भारत–जापान सम्बन्ध मजबूत हो ही रहा था कि सन् 1998 में भारत द्वारा परमाणु परीक्षण किये जाने का जापान द्वारा एक बार फिर कड़ा विरोध किया गया। परमाणु परीक्षण का विरोध किया जाना जापान का हक भी था और नैतिक कर्तव्य भी। परमाणु परीक्षण के उपरान्त विभिन्न देशों द्वारा भारत पर आर्थिक प्रतिबन्ध लगाये गये जिसका जापान ने समर्थन किया। भारत–जापान के मध्य बढ़ते तनाव को शिथिल करने का कार्य तत्कालीन अमरीकी राष्ट्रपति विल क्लिन्टन ने किया। सन् 2000 में दोनों देशों के मध्य '21 वीं सदी में भारत–जापान वैश्विक साझेदारी पर सहमति बनी तथा जिसके उपरान्त नवम्बर 2001 में तत्कालीन प्रधानमन्त्री श्री अटल बिहारी बाजपेयी जी जापान की यात्रा पर गये जहॉ उन्होने नेता जी सुभाष चन्द्र बोस की समाधि स्थल का दौरा भी किया। जिसके उपरान्त दोनों देशों के शीर्ष नेतृत्व द्वारा एक–दूसरे देश की पारस्परिक यात्रा का एक दौर प्रारम्भ हुआ। यहाँ यह ध्यान दिलाना आवश्यक है कि भारत एवं जापान के मध्य उच्चस्तरीय पारस्परिक यात्रा का समझौता है, ज्ञात हो कि भारत के साथ ऐसा समझौता रूस के अतिरिक्त केवल जापान के साथ है।

सन् 2011 में आपसी सम्बन्धों को और अधिक मजबूती प्रदान करते हुये दोनों देशों के मध्य 'व्यापार आर्थिक साझेदारी समझौता' (सी0ई0पी0ए0) हुआ, जिसने दोनों देशों के मध्य राजनीतिक सम्बन्धों को नयी दिशा दी इसी बीच सन् 2011 में जापान में भयंकर भूकम्प आया जिसमें लगभग 5000 लोगों की जाने गयी तथा लगभग 2500 लोग आज भी लापता हैं। जापान में आयी इस प्राकृतिक आपदा के समय भारत द्वारा खाद्य सामाग्री, दवायें आदि जैसी जीवन के लिए आवश्यक वस्तुओं को जापान को सहायतार्थ भेजा गया। इस घटना के उपरान्त प्रधानमन्त्री डॉ0 मनमोहन सिंह नें संसद में घोषित किया कि यह देश (जापान) भारत को सबसे अधिक आर्थिक सहयोग दिया है, वह हमारे संकट की स्थिति में हमारे साथ रहा है अतः आज जापान स्वयं संकट में है तो हमारा फर्ज है कि हम उसकी सहायता करें। डॉ0 मनमोहन सिंह के कार्यकाल में ही सन् 2013 में जापान के सम्राट एवं साम्राज्ञी भारत की यात्रा पर आये जिसके अन्तर्गत उन्होने विभिन्न शहरों एवं महत्वपूर्ण स्थानों की यात्राएँ की। ध्यातव्य है कि इससे पूर्व जापान के सम्राट एवं साम्राज्ञी को सन् 1998 में आयोजित अखिल भारतीय बाल सम्मेलन में भी आमन्त्रित किया गया था किन्तु उसी वर्ष भारत द्वारा परमाणु परीक्षण किये जाने के फलस्वरूप जापान द्वारा यह यात्रा रद्द कर दी गयी थी।

स्न 2014 में नरेन्द्र मोदी भारत के प्रधानमन्त्री बने तथा अगस्त–सितम्बर 2014 में ही इन्होंने जापान की यात्रा की। ध्यातव्य है कि प्रधानमन्त्री मोदी जब गुजरात के मुख्यमन्त्री थे तब सन् 2002 में जापान के ओबे शहर की यात्रा की थी। सन् 2014 की अपनी यात्रा के दौरान मोदी द्वारा हिन्दी में दिये गये भाषण नें न केवल अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी भाषा एवं भारत की प्रतिष्ठा को समृद्ध किया बल्कि जापानी विद्यार्थियों में हिन्दी सीखने की ललक भी पैदा की अपनी इस यात्रा के दौरान प्रधानमन्त्री मोदी द्वारा 2 सितम्बर सन् 2014 को टोक्यो में जापानी सम्राट 'अकिहितो' को पवित्र भारतीय धर्म ग्रन्थ भगवत्गीता की प्रति उपहार स्वरूप भेंट किया गया। यात्रा के इस क्रम में जब सन् 2005 में जापानी प्रधानमन्त्री कोइजुमी भारत दौरे पर आये तब 'जापान–इण्डिया पार्टनरशिप इन द न्यू एशियन एरा : स्ट्रैटजिक ओरिएंटेशन ऑफ जापान–इण्डिया ग्लोबल पार्टनरशिप' घोषणापत्र पर हस्ताक्षर किये गये।

सन् 2016 में अपने जापान यात्रा के दौरान प्रधानमन्त्री मोदी ने जापान में बुलेट ट्रेन से ढाई घण्टे की यात्रा की। इस यात्रा के उपरान्त भारत में अहमदाबाद से मुम्बई के मध्य जापान के सहयोग से बुलेट ट्रेन आरम्भ करने का निर्णय लिया गया। 14 सितम्बर सन् 2017 को जब जापानी प्रधानमन्त्री शिंजो आबे भारत की यात्रा पर आये तब प्रधानमन्त्री मोदी द्वारा अहमदाबाद में स्वयं उनकी आगवानी की गयी। महत्वपूर्ण यह था कि इस समय जापानी प्रधानमन्त्री भारतीय पोशाक में थे। इस यात्रा के दौरान दोनों प्रधानमन्त्री द्वारा अहमदाबाद से मुम्बई के मध्य सन् 2022 तक बुलेट ट्रेन प्रारम्भ होने की सम्भावना व्यक्त की गयी। भारत–जापान सांस्कृतिक सम्बन्ध के अन्तर्गत यदि वर्तमान समय में शिक्षा की बात करें तो स्थिति बहुत सुखद नहीं है। सन् 2016 में जापान में पढ़ने वाले विदेशी विद्यार्थियों की कुल संख्या 1,71,122 थी, जिसमें अकेले चीन की हिस्सेदारी 75,262 विद्यार्थियों की है जबकि इसी वर्ष जापान में पढ़ने वाले भारतीय विद्यार्थियों की संख्या मात्र 880 है, वहीं सन् 2015 में यह संख्या मात्र 773 थी। भारत एवं जापान के मध्य शैक्षणिक आदान–प्रदान को आसान बनाने हेतु दोनों देशों द्वारा विद्यार्थियों के लिए बीजा नियम अत्यधिक आसान बना दिया गया है, अब बीजा के लिए विद्यार्थी पहचान पत्र ही पर्याप्त है। अन्त में हम बात करना चाहते हैं भारत के सबसे विश्वसनीय देश की तो एक सर्वे के अनुसार भारत के सबसे विश्वसनीय देशों की सूची में 46 प्रतिशत अंक के साथ जापान प्रथम पायदान पर है जबकि रूस 23 प्रतिशत, अमरीका 14 प्रतिशत, फ्रांस 4 प्रतिशत एवं युनाइटेड किंगडम 3 प्रतिशत के साथ क्रमशः द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ एवं पंचम स्थान पर हैं। इस सर्वे में चीन 0 प्रतिशत मत प्राप्त किया है। ध्यातव्य है कि यह सर्वेक्षण प्रतिवर्ष किया जाता है।

निष्कर्ष :भारत–जापान सम्बन्ध दोनों देशों के लिए एक ऐतिहासिक धरोहर है जिसे हम बौद्ध धर्म के साथ जोड़ कर देखते हैं, प्रारम्भिक काल में दोनों देशों के सम्बन्ध धार्मिक एवं सांस्कृतिक रूपी दो मजबूत पायों पर टिके थे तथा समय के साथ दोनों देशों के मध्य आपसी सम्बन्ध निरन्तर समृद्ध भी होते गये। दोनों देशों के विद्वानों के आपसी सम्पर्क एवं पारस्परिक समझ इस सम्बन्ध को और अधिक प्रगाढ़ बनाता है। सन् 1951 में सैनफ्रांसिसको समझौता में भारत की अनुपस्थिति एवं सन् 1974 तथा सन् 1998 में भारत द्वारा किये गये परमाणु परीक्षण का दौर संक्षिप्त काल के लिए दोनों देशों के मध्य कड़वाहट का दौर था, किन्तु दोनों देशों के नेतृत्व की आपसी समझ, पारस्परिक आदान–प्रदान, भारत के प्रधानमन्त्रियों द्वारा जापान को उपहार स्वरूप 'हथिनी' भेट किये जाने, दोनों देशों द्वारा एक दूसरे की जरूरतों पर साथ खड़े होने एवं दोनों देशों के शीर्ष नेतृत्व की पारस्परिक यात्रा, विद्यार्थियों हेतु वीजा सुविधा आसान बनाना आदि महत्वपूर्ण कार्यों ने दोनों देशों के मध्य सांस्कृतिक एवं आर्थिक सम्बन्धों को अधिक मजबूत एवं विश्वसनीय बनाया है। फिलीपींस में सम्पन्न 31 वें आसियान सम्मेलन से इतर भारत, जापान, अमरीका व आस्ट्रेलिया के मध्य प्रथम चतुष्कोणीय वार्ता सम्पन्न हुयी, जिसके सूत्रधार जापानी प्रधानमन्त्री शिंजो आबे थे। हिन्द–प्रसान्त क्षेत्र में बढ़ते तनाव के सन्दर्भ में यह चतुष्कोणीय वार्ता दोनों देशों के मध्य स्थापित सम्बन्ध को और अधिक समृद्ध करेगी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. यादव, आर0एस0 – भारत की विदेश नीति, पियर्सन, दिल्ली, 2013।
2. हरि, डी0के0 – इण्डो–जापान : सहस्त्राब्दियों से एक सम्बन्ध, श्री श्री पब्लिकेशन ट्रस्ट, 2017।

3. यादव, आर0एस0 – इण्डियाज रोल इन द यू0एन0 पीस कीपिंग, वर्ल्ड फोकस, वाल्यूम 18, अक्टूबर–नवम्बर, 2017।
4. केशवन, के0वी0 (सम्पादक) – इकोनॉमिक लिबरलाईजेशन इन इण्डिया : जापानीज एण्ड इण्डियन पर्सपैक्टिवस्, नयी दिल्ली, 2001।
5. नायडू, जी0वी0सी0 – इण्डो–जापान रिलेशन्स : एन ऐनेलिसिस ऑफ इश्यूज ऑफ कॉमन कन्सर्नज, नयी दिल्ली, 2001।
6. डॉ0 एच0एस0 प्रभाकर – मोदी की जापान यात्रा : भारत–जपान द्विपक्षीय सम्बन्धों का वर्धमान विकास, वर्ल्ड फोकस, भारत की विदेश नीति भाग–2, अंक–36, मार्च 2015।